पुल पर पानी

पुल पर पानी

ऋतुराज



राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

क्रम

पुल पर पानी

सिर्फ देखते जाओ

जब तक कोई आदमी
इस पवित्र धरती का हिस्सा है
सोचो मत सिर्फ उसे देखो

दूसरो की बात सुनने के लिए
तुम्हारे पास एक भोली शुभकामना है
पहले से ही खिले फूलो की समर्पित प्रसन्नता है
साहस नही तो क्या हुआ
धीरज तो है खुद-ब-खुद इस समय के पहाड से
सुख की गोलमटोल भौतिकताओ मे लुढकते चले आने का

उडती है टहनी एक ही जगह हवा मे
लेकिन दबाव को भीतर से तोडती हुई
और जब भौंरे घर बना रहे होते हैं अपने बच्चो के लिए
तो हरेक खुशबू और रस और मुलायम रेशा
मानो उनके ही लिए बना होता है

एक सिलसिला यहाँ जरूर है
जिसके गहरे नीले अडूब पानी के किनारे
तुम्हारे मन की पवित्रता सिकुडी सिमटी खडी है

बस यहीं तक

चुपचाप बरदाश्त की भी हद होती हो
तो बस यहीं तक हो

दीवार के ज़रा-सा ऊपर
भक भक जलता चेहरा
भयभीत चोर की तरह नहीं
किसी गुस्सैल लड़ाकू का
अगर निकले
तो साबुत
हर चीज़ में दरार बनाता हुआ

अपनी जवानी को
पीछे मत धकेल
निकल
परचम की तरह उसे उड़ाता हुआ
ज़िन्दा रहने के आसान से काम को
आये दिन कठिन बनाता
अपनी आवाज़ को
उनके बहरेपन से लड़ाता हुआ

आये दिन आये दिन
चुप होना भी

राजधानी मे

अचानक सबकुछ हिलता हुआ थम गया है
भव्य अश्वमेध के सस्कार मे
घोडा ही बैठ गया पसरकर
अब कहाँ जाने से क्या लाभ ?

तुम धरती स्वीकार करत हो
विजित करत हो जनपद पर जनपद
लेकिन अनाज निधनता और बीमारी मे ही तो राजा हो

लौट रही हैं सुहागिन स्त्रिया
गीत नही कोई किस्सा मजाक सा सुना रही है—
राजा थक गय हैं
उनका घोडा भी बूढा दाशनिक हो चला अब
उन्ह सिफ राजधानी के परकोटे म ही
अपना चाबुक फटकारत घूमना चाहिए

राजधानी म सबकुछ उपलब्ध है
बुढापे मे सुदरिया
होटलो की अतमहाद्वीपीय परोसदारिया

राजधानी मे खानसामे तक सुनात हैं
रसोई म हुए महायुद्धा की चटपटी कहानियाँ।

फलादेश

इस आग की सरपट दौड मे
दिलासा का शीतल स्पर्श चाहिए ?

नये को देर से जन्मने के लिए
कोसना गलत है
क्योंकि अभी बीते का
प्रायश्चित चाहिए ?

इतनी जल्दी मोहभग नही होगा
वह घर अभी दूर
अभी गर्मी भरपूर
लपटें उठती हैं गलियो मे
धधकती भट्टियो से

चाहिए
चीस का यन्त्र कोई बीजमन्त्र ?
दार्शनिक जनतान्त्रिक के पास होना चाहिए

मैंने जिसे पिछले दिनो
अपने भीतर मरते हुए देखा है
वह आदमी
जो देश का पचाग पत्रक बाँचने

गण बैठाने मह शात करने मे दक्ष था

वह मरता गया
और फिर नयी आशा मे जीवित
होने लगा
उसे चाहिए एक बदलाव
जो अभिनय नही हो
एक समय जो बहुत थोडा भी नही हो

वह चकाबू नही
जनसिद्ध होना चाहिए

इस पुरातत्व मे

ठहरे हुए सूरज के सामने
एक गिराऊ छज्जा
छज्जा ही नही
एक पूरा खँडहर
जिसके बीच मे कही कही
पानी रिसता हुआ

अँधेरे के डर से
रोशनी मे भी झँपकँपाती है
तुम्हारी आखें
चौकन्ने कान सुनते हैं
भीतर की खामोशी

हाथो की पकड
मजबूत करते हो तुम
पर डूबती हुई रोशनी रस्सी की तरह
फिसलती है

इस छज्जे के नीचे
चमकीले इतिहास के मुकुट
गर्वीले ध्वजवाहक निकल चुके हैं
लेकिन तब भी तुम इसी तरह

अब गिरे तब गिरे डर मे खडे
दर्शक थे
न दरबान और न दरबारी

इसी तरह
इतिहास की कालिख को
पोखरे के पानी से
उजालते
बण्डी मे थेगलियाँ लगाते
इसी तरह
अपने नही आते अच्छे वक्त को
बुनाते
तुम बावडी म उतर गये
और वापिस लौटते वक्त
एक खौफनाक मकडी के
जाले मे फँसन से बचत हुए
बहुत समय तक जीन मे छिप रहे

तुम्हारे भीतर
एक भारतीय आत्मा थी
वही अगारा जैसी जलती दो आखें
और गुनगुने आसुओ म डूबा तिरछा चेहरा

बहुत दिनो तक
तुम महला बँगलो की मनहूस परछाइ से
बचते दुबक गये
फिर प्रभु लोगो का एक जलसा हुआ
जिसमे तुम्ह
आजाद रहने का हक दिया गया
आजादी से बाहर देखने
वक्त बेवक्त तालिया बजाने का हक

उन्होने पत्थरो का मजबा
हटा दिया

नये किवाड लगा दिये
और बल्लियो पर
गिराऊ पट्टिया रोकने के लिए
तुम्हें खडा कर दिया

अन्त का उदय

सबसे निचली सीढ़ी पर
बैठा है वह
हाथ-पाव सुन्न
सीने पर भारी दबाव
और अपने पेट मे
खौलते आग के गोले को महसूस करता
एक ग्रेनाइट चट्टान की तरह
जड और निष्प्राण।

ऊपर छत से
चिड़ियाएँ अन्न खाकर
कभी की उड गयी होगी
कभी के विदेश पहुँच गय होगे
मेधावी छात्र

उसे तो इसी का अचरज है कि
एक प्याली चाय मे
जिन्दगी की सारी ललक और तसल्ली
सुबह सुबह न जाने कहा से चली आती है ?

बस होनी चाहिए
इन टाँगो मे ताकत

और नीचे से ऊपर खीचती
रोशनी की एक पतली मजबूत डोरी।

आप कहते है धुर नीचे से उगा है
सूरज
और लोटने लगी है इसकी किरणें
उन सूखी टागो की हड्डियो पर
फिर क्यो उस आदमी के हाथ
छू रहे हैं अन्नदाताओ के चरण ?

अभी तक भी वह अपना माथा
टिकाकर लोट रहा है धूल म।
नही खोलता वह
अपनी अण्टी मे बँधी चौवन्नी
कागज के टूक को हाथ म
लेते वक्त कापता है
डरता है।

कही बाद म
कोई यह नही कह दे कि
उसका नाम गलती से दर्ज कर लिया गया था।

कौन

जिसके चारों तरफ
धूप का चमकीला चेहरा था
वह परछाईं है अकेली
किसी खम्भे के पीछे दुबकी तुच्छता की।

धीरे से एक चौकन्नी दहशत
बढ़ गयी है बरगद के आगे
दीमकों के शहर की
सुरंगों में दौड़ती हैं दासियां
हिजड़े और प्रतिहारी—
रानी की सांस फिर से चलने लगी है।

वह मरी ही कब थी—?
जब सब मिलकर एक को मारते हैं
तो इसी तरह होता है।

रानी को बोलते दरबारियों ने सुना है
उसकी हँसी ने शत्रुओं को दहला दिया है
एक सनसनीखेज खबर के लिए
लान पर बैठे हैं सारे अखबारनवीस
बतकही चल रही है काफी की गर्मी में।

कल देश जान जायेगा
कि गरीब की चमडी के लिए
कौन सा दल सही नाप के कपडे पहनायेगा
कौन देगा उसके मुह मे निवाला
बाढ और अकाल से
मुक्ति दिलानेवाला देवता कौन होगा ? ?

और अगर देवी कुपित हुई
तो
कौन इसका दोष जनता के मत्थे मढेगा ? ? ?

चुनो उन्हे जो तुम्हे चला सके

कोई चीज़ यहाँ पक रही है।
पकने की खुशबू कुछ ही के लिए है
बाकी सबके लिए एक चिरायंध है।

एक काली मोटी पड़त
जिसमे अँगुलियाँ धँस जाती हैं।

चारो तरफ हरा हो
और हो निशक प्रजासुख—
एक ताकत
जो यहा आपस मे लड़ने से हासिल होती है।

चीख़ती है कविता
टिटहरी बन
किसने दिया किसने लिया
यह धोखा !!

एक नाटक यहाँ सुसंस्कृत सुशील
नागरिक के लिए मचित है।
कई निर्देशक कई अभिनता
कई दृश्यबंध

एक साथ शेर मछली सुअर गाय हो जाने के
उपक्रम मे हँसते है ।

फिर चीखती है वही बेचैनी—
आओ, हम तुम्हे बताते हैं
किसने दिया धोखा ?

इस धमयुद्ध मे
सिफ प्रजा ही तो मूकदशक है ।
भूखी, उत्सुक और दोनो पक्षो के लिए
शुभकामना सहित ।।

सवाद

दरवाजे पर गडी आख से
क्तरा जानेवाला आदमी
आज फिर
हमारी बस्ती मे आया है
वही शातिर कनखी
और कपोलधाम मुखारबिन्द।

एक बूढा आगे बढा—
"पाय लागू महराज!
अबकि सबकर कछु जादा दिवाय देऊ "

अनुभव और व्यवहारिकता का
अनोखा सगम मुस्कराता है।

"अभी कल तक जहा गूगा भय था
बोलो, नय शब्द लाने मे
अब कोई दिक्कत हुई?"

आढत के नफे को भापा म
फाई करता
वह लहलहाता है

हाँका

मैं तुम्हे यहाँ लाया था
बीहड़ रास्तो से निकालकर
दुर्गम चट्टानो, चोटियो के प्यासे, सदा जलते
भूखण्डो से बचाकर।
एक छोटा सा झूलता घोंसला
इस विस्तरित धरती पर कही तो होता
निरापद   होता उत्सुक आशा मे
दिपती आँखो का वह एक दबा झुका अस्तित्व।

जब सारा पराक्रम वाक्छल के अनेकों चालाक
अभिप्रायो से लैस लौह रोलर जैसा फिरता था
चारो तरफ   मैंने तुम्हे निश्चिन्तता से
झपकी लेने का एक घर वक्त दिया
बिनबुहारी जगह
सजा दिया तुम्हे बचपन मे खिंची फोटो की तरह।
पीछे फूल नही
गहरी हरी पत्तियाँ थी
एक दरख्त था अपने पपड़ाये वक्ष पर
उभरी मोटी गाठ लिये।

यहा पहुँचने पर मुझे लगा कि
अब असफलताएँ तार पर सूखते फटे कपड़ो की तरह

हमे नही चिढायेंगी
आकाश मे छितरे फोके बादलो का रेगिस्तान भी देखकर
हम पुलकित होगे कि जो खाली है
वह भी कभी गुड़हल की तरह खिलेगा
धीरे लेकिन लाल रग मे फूटती पिचकारी जैसा।)

(मैंने सोचा था यहाँ पहुँचने का उत्साह
तुम्हारे अभावो की उदास परतो को धो देगा।
लेकिन वे जो घाती थे
रोशनी के मालिक बन गये
वे जिन्हे हम पीछे छोड आये थे
हमसे आगे पहुँचकर दात किटकिटा रहे थे।
उन्हें हमारे इस पडाव का पहले से ही पता था)

पूर्ववत् यथावत्

शहर के चारो तरफ
पत्थरो के बीच मे घूमती है नदी ।
तुम्हारी भाषा ने भी तो
न जाने कितने घुमाव देखे हैं
कितने स्पन्दन कितने फेनिल शब्द प्रवाह ! !

कुछ भी कहो
वक्त बदलता है तो आदमी की जबान
रग छोडती है ।
नदी मे होता है खेल
पक्ष और विपक्ष का
और शहर के बीचाबीच
वही मेरा सूना खँडहर
तुम्हारी इस नदी को परछाइ बनकर
लीलता है ।

जब कहा था "क्रान्ति के दुश्मन
"शोषण के पक्ष मे शातिर घिनौने आदमखोर"
और अब वे ही लोग
गले हिलगते राहत की सास ले रहे हैं
— भई, कितने बुरे दिन थे वो कितने
काले तानाशाही के नुकीले कँगूरो पर

असुर थे नोचते दबोचते "।

मैं आज फिर
तुम्हारी इस नदी के तेज कटाव के बीच
फँसा, हिल रहा हूँ चिथडे सा
उसी तरह निराश्रित और स्पष्ट
वो ही तेज जलती आखें
चेहरा बिल्कुल दृढ और भ्रममुक्त
मछली गन्ध की उबकाई मे
उसी तरह बिल्कुल अपनी चिर अमिट तगाई म

मै तुम्ह देख रहा हूँ
पल्टा खाते
शब्दा को बफिनी मे रेवडियो सा चबाते।

शहर का अँधेरा मेरे चारा तरफ घिरा है
पूर्ववत् यथावत

व्यस्त हे

किसी सूखे दिन की फीकी मुस्कान के सामने
तुम बिल्कुल उदास हो ।
पेड हवा पी गया है
और चिडिया कटी बेसुरी ध्वनिया निगल गयी है ।
जवानी की आवाज़ दमकल की घण्टियो जसी होनी थी
लेकिन इतनी रिरयाती चिचयाती क्यो है ?

तुमने रोशनी के पार
शून्य की नीली परिधि मे भटकना स्वीकार किया ।
घडियो की एकरसता मे
बिखरे कलपुरज़ो की तरह तुम्हारे लोग
ऊपर उठाये जान के इ तज़ार मे रहे
और पानी रेत मे स्मतिया बनाता गुजर गया ।

मन चाह और उबाऊ लोकत त्र ने
तुम्हारा परिवार घोट दिया ।
बच्चो की शिक्षा को एक गैरज़रूरी तुच्छता से
मढ दिया ।
प्रेम को खीज मे और पत्नी की अनवरत
अस तोषभरी मुक्तिकामना मे ।
लोकत त्र ने रोटी के साथ वही किया
जो एक बिल्ली चूहे के साथ करती है खेल-खेल म ।

इस अश्लील घिनौने शोषण के समाज मे
बढ़िया आमो की टोकरी मे
करोडो बच्चो की लालसाभरी पुतलियाँ तडपती रही।
हवा से गिरी खिरनियो की चोरी करते वक्त
स्वाद का उल्लास और पकडे जाने की दहशत के बीच
जिये हैं तुम्हारे बच्चे।

जबकि झूठे शब्दो की पिघली चपडी से
पूरे देश की सस्कृति पर अपने नाम की मोहर लगाते हुए
वे तुम्हारे लिए योजनाएँ बनाने मे व्यस्त हैं।

सन्देह

सबकुछ लुट जाने के बाद
जो बचा है
वह है सन्देह
यानी विश्वास नहीं कि
झड़ जाने के बाद
बीज दुबारा फूटेगा

बरामदे में रखी कुर्सी बोलती है
वह उठकर
भीतर चला गया है
लेकिन सन्देह फिर भी सूँघता है
उसके बाहर निकल जाने के रास्ते

उसने कुछ भी फैसला नहीं सुनाया
फाइल देखकर कहेगा
जब वह बीवी को
सिनेमा दिखाकर
रात दस बजे लौटेगा

लेकिन वही सन्देह कि
वह आते ही नींद में ऊँघने लगेगा
और उसकी याददाश्त

बीवी की नरम हथेली के गुदगुदे दबाव मे
ऑटोमैटिक प्रेस के बल्ब की तरह
बुझ जायेगी

हमारी खुशी
उसके भरोसे से मुस्काने पर टिकी है
वह अँगुलियाँ चटखाते वक्त
अमरूद के मिठासभरे गले से
धीरज बँधाता है

उसके शब्दो मे शिष्ट सन्तुलन है
लेकिन स देह लगातार हमारे मन मे
टिटहरी सा चेताता है कि

वह हमसे बहुत दूर है
और उससे हमारे हक मे
कुछ करवाने म बरसो लगेंगे

क्यो वह दिशाहारा

जानता हूँ इस साफ सुथरी बस्ती म
यह घिनौना चेहरा किसका है ?

उसका
जिसे सुरक्षा और आर्थिक मजबूती मिली है
जिसका सबल है पक्ष और विपक्ष ।

पटरी पर भीख मागती औरत
तुम्हारा विपक्ष क्या है ?

एक ही जेब मे दोनो हाथ घुसेडे
खडा है कपडे का व्यापारी
और धार्मिक सास्कृतिक कपट का
मदु नश्तर खाती तुम्हारी यह लाचारी
तुम्हारे लुज हाथो मे खोटे सिक्को के अलावा
कुछ भी तो नही ।

वे नदिया सूख गयी
जिन्हे पहाडा से नीचे उतरना था
सडकें इस शान्त धुधलके मे
देखती है क्रान्तिकारी पार्टियो के
ससदीय और शालीन जुलूस, भौंचक ! !

अब प्रेम मे भी ठण्डे, सिकुड जाने के अलावा
कोई और चारा नही
'साहस' को दब्बू 'समझ' म बदलो के अलावा
कोई और नारा नही

फिर भी पुकारती है इस घाटी मे
सूखी लकडिया बटोरती मेरी जवानी
एक जिन्दगी
जो इन प्रपचियो के हाथो बियाबान हुई ।

शहद के छत्ते को तोडते हुए चरमरा गयी
यह डाल
और सुविधा सुरक्षा का दरख्त काटते काटते
भोंथरी हो गयी हर फाल

क्या वह ताकतवर आदमी
अभी तक यहा लेटा है ?
नीचे की जमीन की तरह धसकती जा रही हैं
उसकी आखें

क्या वह विराहारा
अकेला आग यहां रोता है ?

बस तुम ही नहो

तुम्हारी व्यस्तता का एक कतरा
उन्हें हँसते हुए देखने को दो

सूरज ने पहले ही बहुत कुछ जला दिया है
नदी अब इतनी शीतल नहीं लगती
हिंगोट पर चिड़िया चहकती तो है
लेकिन कल की अनिश्चितता फिर भी है

किसके लिए तुम इतना भागते हो ?
कौन सी जिद है
जो उन्हें सुबकता हुआ नहीं छोड़ सकती ?

सुबह से शाम तक
चीजों को सँभालते रहना
और उनसे इतना सा कहना
कि बिखरो मत

क्या कभी नहीं टूटेगा प्रतीक्षा का धीरज ?
अब कौन सी पहचान
इस जले-बुझे सामान की बाकी है ?

उन्हें खिलते हुए
झाँकते हुए कपड़ों में अटकते देखने के लिए
फुरसत का एक झूलता हुआ पल दो

क्योंकि आदमी इतना मरदूद है
कि चढ़ता हुआ भी नीचे लौटने की चिंता में पड़ा है—
वह धरती को
मौसम के साथ-साथ छूकर भी
बिल्कुल नहीं बदला है
वह भूला है
तो सिर्फ इस बदलने को
चाहने को
कि सिलसिला तोड़ने से ही टूटता है

एक साफ चमकदार नीयत के दबाव में।

कितनी दूर

इस ठहराव की चट्टान के नीचे
केकड़ा का सिमटना, छिपना

मेरे बूढ़े पिता की तस्वीर की
चमकीली बेजान आंखों जैसी है
उनकी आखें—
एक जड़ भाषा है यह दृष्टि
जो कही भी नही ले जाती

पानी के कोलाहल की तरह
प्रशासक की आवाजाही
एक भयभरा सोच है
अपने म छिपे रहने का

समय नही बदला है
बाढ नही कोइ भयावह अनहोनी
आजादी का दु स्वप्न भी
दो मीटर पानी के भराव से नही टूटता

एक तुच्छ औपनिवेशिक भदेस है
और प्रशासन
गाड़िया के आरक्षण और जमीन के
काले पसीने स ऊपर

हेलीकोप्टरो की उडान के सिवाय
कुछ भी तो नही

यहाँ एक छोटा सा करतब भी
बडी ताजा सुर्ख खबर बनता है
सहजता से मास मे
धँसती है गोली
हँसती है स्वणरेखा नदी—
सब कुछ लील लेती है उसकी तरलता
एक सडता हुआ ठहराव और
ऊपर का नुकीला निर्मम दबाव
सब कुछ

जब कभी भी तस्वीर टेढी लग जाती है
एक नया मतलब होता है
दीवार का
और उस चेहरे का
जो छत नही जमीन छूने का
बेचैन होता है—
वह हाँफता, उखडता पूछता है
अभी कितनी दूर है

कितनी दूर
वह दरवाजा, वह देश
जहाँ अकाल कही नही
लकडहारो की सूखी हड्डियाँ नही
जहाँ पुष्ट हँसमुख किसान
और कारीगर
अपन बच्चो के स्कूल जाने की उमर म
आते ही चिन्तित नही होने लगते

अभी कितनी दूर है
वह सच
जिसस देश देश बनता है
महज भौगोलिक सीमा नही।

मेज

उन लोगो ने मेज के दोनो तरफ
बैठकर
एक दूसरे के खत पढे हैं
कल तक मिलनेवाली सफलताओ के सदेश
और आपातकालीन वाक्यो के माग निर्देश
वे हँसे हैं पसरे हैं झुलके है

उन लोगो ने
हमारे लिए पारित आर्थिक प्रस्ताव की
खुशी मे
खूब थपथपाई है यह मेज
उनके ही खरीदे एक कवि ने
उधर के आर्केस्ट्रा और इधर की शहनाई को
"सास्कृतिक आदान प्रदान के इतिहास म
महान स्वर्णिम पृष्ठ ' कहा

तब, मतलब, उनकी अनेक झाकियो के बाद
आया वह बढई जिसने
वह मेज बनायी थी
उसकी हालत पहले से भी बदतर थी

मेज नहीं
तब उसने अपनी आत्मा को
कीलें ठोक ठोककर
प्रजातन्त्र की रक्षा और शान्ति के लिए
अपनी दो टाँगों पर खड़ा किया था

उसने अपने रन्दे से लकड़ी का खुरदरापन
छीला था गाठें साफ की थीं

अपनी आत्मा की सारी पवित्रता
निश्छलता लकड़ी में पेवस्त करने के बाद भी
वह
वहीं का वहीं था

वह बोली

जो हरियल सुख नंगे पहाड़ों के नीचे
पैदा हुआ है
मैं उसका एक हिस्सा नहीं हूँ।
झरना एक रुककर आगे बढ़ता है
वह भी मेरा नहीं है।

मैं तो सिर्फ उसके बहुत करीब हूँ
और उसका पानी पीना चाहता हूँ।

सुना है
वे हमारे लिए जीतकर देंगे
पहाड़ नदियाँ, जंगल
हरे मैदान और सड़कें
ऐसा कैसे होगा
जबकि वे खुद हमारे नहीं हैं।

जिस धरातल पर
अपनपन का विचार उगता है
वह उनकी सम्पत्ति है।
सारी आबोहवा उनकी त्यागी हुई
कार्बनडाई आक्साइड है।

तो फिर इस हालत म
तुम और मैं और धीरे धीरे बढता हुआ
यह बच्चा कैसे जिन्दा है ??

वह बोली—
हम जवान हैं इसलिए जिन्दा है
और हमारी चिन्ताओ ने
इस बच्चे को भी असमय जवान बना दिया है।
झरने और फव्वारे और बारिश
धूप—
इनका सुख उठाने के लिए
किसीका शोषण करने की जरूरत नही है
सिफ आजादी की गोद
और हमारे शत्रुओ की अनुपस्थिति ही काफी है।

तब य और भी ज्यादा सुन्दर लगेंगे
और तब तक अपने इस विचार की
आग बरदाश्त करने के लिए
हमे इनके आस पास रहना चाहिए।

गुरिल्ला

कुचले जाने की दहशत में
घबराकर उसने मेरी कमीज़ की
बाह पकड़ ली
अपनी बाह् मेरी बाह् मे पिरो दी
लेकिन तब ही लाल रोशनी हुई
और सारा यातायात अवरुद्ध हो गया।

अब उसे पकड़े जाने का भय था
जिसकी वजह से वह
मुझसे और ज्यादा चिपक गया
ऑटोमैटिक स्विच ख़राब हो गया था
और लाल रोशनी लाल बनी हुई थी
हरी रोशनी के लिए उम्मीद लेकर
वह मेरी गर्दन से लिपट गया

सारे पहिये स्थिर थे
और साइलैन्सर बौखला रहे थे
सारे जिस्मो मे एक ही जगह थिर
रहने की ऊब थी

तब ही उसकी दहशत की पहचान
मेरी आंखो म हरी रोशनी बनकर चमकी

और उसे आज़ादी मिल गयी।

वह भीड से साफ साफ बच गया
एक ज़रा सा दाग भी उसकी कमीज़
पर नही था
एक ज़रा सी भी शिकन
उसकी पतलून पर नही थी
लेकिन घर लौटते वक्त
वह उसी तरह से मसोसा हुआ
सलवटो से घिरा एक मजबूर
आदमी दिखायी दिया।

दरअसल सोचे हुए को
अमल म लान से पहले
कितने ही अस्तरो के उधडने की
आवाज़ के बीच
उसने तय किया था
सम्पन्न होना

एक एसी फाकामस्ती को
हमेशा के लिए छोड देना
जो टकराहट पैदा करके
एक ठोस शक्ति म बदल जाती है

फिर भी नही

पानी और भी नीचे चला गया है।
पदा निकल आया है।
आदमी की गजी खोपडी चमकती है
इस चतुर्दिक सुखाव मे।

जहरीली हवा मे सोयी हुई है
जनता   नशे म आखें बन्द।
सोचने की ताकत मर गयी है प्यासी जमीन मे।

नही उठती नही उठती
कोई चाहे कितना ही चीखे
गालियो की हद तक पागल होकर।
अकड जाये नगा।

हा नगा और बगल मे किताब
जैस तुमने किसी जैन सन्यासी को देखा होगा।

चाहे हो जाये वसा
नही उठती जनता
फिर भी नही।

जगी हुई कायरता कतराती है।
बगल से निकल जाती है
साधनसम्पन्न चाटुकारिता
मेज़ और सेज की सुरंगों से
सिंहासन के भीतर घुस जाती है।
और बची खुची पूंजी पर जात का भरोसा है।

नहीं उठती जनता
फिर भी नहीं।

अपने लोग

अगर मैं वहा नही जाऊँ
तो भी वे वही होगे
बिल्कुल अपनी जगह ठीक ठीक
वक्त निचोडते

उनका वह जवान लडका
अखबार फडफडाता
और सामने गली के लटटू सा निस्तेज

वहा उनके अलावा और भी होगे
चालाक, कामकाजी लाला लोग
ज रामजी की कहते
बडे फुर्तीले, चुस्त
लेकिन वे मेरे लोग
आशा मे आखें जुटाये हैं
कि लडका न हुआ
कोई जमा खाता हुआ
जिसके भुगतान मे
अब देर नही लगगी

देश की सरकारें
गलियो म बदल जाती हैं

और ये मेरे अपने लोग
बेल की तरह
हर बदलाव से लिपटकर
ऊपर कुछ ऊपर देखने की
चढ़ने की कोशिश करते हैं

बिल्कुल अकलुषित और बेजान
ये मेरे लोग
धरती बसाते हैं
पर अभी तक भी उजड़े हैं
वक्त का सैलाब इन्हें
घौंसले सा काटकर निकल गया है
इनकी आंखों में
बेघर होने का खालीपन है

इनकी समृद्धि
इस सदी की रीढ़ पर
धीमी चलती हुई चींटी की तरह
निरन्तर
एक उम्मीद की सजन-प्रक्रिया है

पाँव

[पाश्र्व मे बाबा की कविता की गूज]

चप्पलो म फँस पाव
लौट आये उसी ठाव।

सुबह हवा धूल के गुबार को
दूसरी तरफ ले गयी थी
वह पलटा खायी शाम को
राजधानी की कुटिल राजनीनि की तरह।

अब सिर पर धूल
गदन पर चिपचिपा मैल
और बगलो म सडे हुए दिन की महक बची है।

लौट आये
देखकर सगीनो के पहरे मे
सुरक्षित सुर्खाब।
अब एक चप्पल जमीन पर कुछ तिरछी पड रही है
कानो म गूजते है
साइरन की तरह वे बडे निष्ठुर श द।

उन परिन्दो की भाषा
बिल्कुल अलग है

बिल्कुल घुले हुए हैं उनके पक्ष
उनका आकाश उनकी आबोहवा
उनका चकला और उनका तवा
सब कुछ चिकना साफ और अपने मे पवित्र है।

इन पांवो के लौटते वक्त
रास्ते मे कभी रात नही हुई
तय है कोने म सिकुडी वह जगह
इनके लिए जहा से दूसरे दिन
सारी दिशाएँ फिर भटकायेंगी इ ह
खुल जायेंगी सारी नाकेबन्दियाँ
इस ढोग के लिए
कि य कम स-कम दिन भर तो चल सकेंगे
और वापिस लौट सकेंगे।

इन पावो की हर ठोकर मे
वापसी है।
दीवाल मे छिप जाने की मजबूरी है।

धोखा

कसा धोखा !

अगार कोयले थे दोनो तरफ
बठकर पहले तो वे बच्चे उन पर पानी छिडकते रह
लगा कि कोयले धुआ देकर
बिल्कुल ठण्डे हो चुके है।
एक लडका उन पर पाव रखकर चलन लगा
उसन कहा लो बिल्कुल बुझ गय ह
समेट लो।
लेकिन चिमटियो ने जब नीचे से कुरेदा तो
आग की दहकती लौ उनकी तरफ लपकी

कसा धोखा !!

आखें जिसे दखन के लिए बनी थी
वही गायब हो गया
आकाश पर मरुथल का दृश्य
या पानी गिरने की आवाज के बीच
धरती से उठता हुआ गीत
धीरे को छुआ कि छूने तरन गुदाज वक्ष को
और अँगुलियो के पोरुओ पर अपने म सिमटकर आग
रेंगता हुआसमय

हो बिल्कुल मुलायम रंगीन धारियोंवाले कीड़े की तरह—

समय की नींद नहीं टूटी थी
आगे फिसलकर डूब गयी थी इतिहास में

ये कुछ दिन सफ़ेद कनेर के गुच्छों की तरह खिले थे
अँधेरे गलियारे में टकराई उमंग भरी हँसी जैसे
बहुत देर के बाद अचानक जल उठे हों अनगिन बल्ब

धोखा एक ज़रूरी सबक है
इस धरती से उड़ान स्थगित करने के लिए।
मैंने जब अपने पंखों में गुब्बार हवा भर ली थी
और गर्दन शून्य में ऊपर छोड़ दी
अब-से चल कहीं भी की मुद्रा में
कहीं जहाँ जड़ें पेड़ को अधर झूलने से रोके न रखती हों

जड़ों में कैद ज़िन्दगी भी
एक जकड़न है सिर्फ़ एक बँधा हुआ बण्डल
ढोते जाने की मजबूरी है
लेकिन बिल्कुल पेड़ की तरह
जड़ों से ऊपर उठने की कोशिश करता है आदमी।

मैंने कहा ले चल जहाँ घर नहीं
केवल अनवरत उड़ानें हैं—
धोखा इस तरह भी होता है
कि हम लगातार गिरते हुए भी उड़ने लगते हैं

जब हम बिल्कुल मरे हुए के भीतर भी
कहीं न कहीं बहुत ज़िन्दा होते हैं

लड़ाई

दूसरे लोग झाड़ू लगा रहे हैं
क्या आप साफ की गयी जगह पर
बैठते रहेंगे ?

दूसरे लोग लकड़ियों में फूंक मारकर
चूल्हा जला रहे हैं
क्या आप पकी पकाई ही खाते रहेंगे ?

आप कतराते क्यों हैं ?
दूसरों के श्रम से अगर आपकी शक्ल
सुधरती है
तो इसे स्वीकार कीजिए
लेकिन आजीवन
उनके चेहरों पर सनी धूल और कालिख
आपको चैन नहीं लेने देगी।

इलाज सिर्फ यह है कि
झाड़ू उठाइए
चलिए सफाई कीजिए
चूल्हे में फूंक दीजिए
यह आग अब आप खुद सुलगायेंगे।

यह आपके अस्तित्व की लड़ाई है।

हाथ

कानो मे गूजती है हथौडियाँ
रात का गजर है
आसपास झाडियो की स्याह गहराइयो मे
कँटीली टहनियाँ एक दूसरी मे गुथ गयी हैं
और आदमी आदमी के विरुद्ध खडा है
अपना हिसाब करता

आधा सीसी पुआड के ऊपर उझक रही है
अभी चुपचाप दिन आयेगा
पगडण्डी पर से गोखरूओ के झुण्ड हटाता

एक खूँखार आसमान ने
झटके ही दबोच लिया है उन्हे
खनिको की बस्ती मे
बारूद विस्फोट के शोर के बीच
एक बच्चे का जन्म हुआ है
पास के नाले मे एक जर्जर ओढनी और लहँगे के
फीटते जाने की आवाज है
और काँपता हूँ मैं

एक और मजदूर आया है
पत्थरो के मलबे पर

एक और हाथ उठेगा
इस पहाड़ के खिलाफ
लेकिन शोषक के पक्ष में
पूंजी के साम्राज्य को फैलाता

पेड़

उसके चेहरे पर एक बुझापन है
भागते हुए भी पीछे लौटने का ढंग—
मौत उसे अपनी सख्त मोटी अंगुलियों से
छूने लगेगी
तब कहोगे वह बहुत पहले से ही मर रहा था।

पेड़ एक शब्द नहीं
पूरा राग है
वह पहाड़ के साथ साथ पानी में झाँकता है।

उसके मरने की गति
एक प्रान्त जैसी मन्द हो सकती है
लेकिन अपने पीछे खड़ी झोंपड़ी
वह पहचानता है
जहाँ उसका टूटकर गिरना
आदमी की आस्था नष्ट कर देगा
और वह नहीं रही
तो उसका तिल तिल मरना भी व्यर्थ होगा।

शायद इसलिए वह तुम्हारे
यौवन का प्रतीक बनकर खड़ा है
उसी तरह सहमा हुआ और शर्मीला
उसी तरह हर किसी दुर्घटना से लापरवाह।

पानी तुम दोनों की हँसी का प्रवाह है।

खबर

ट्रक उलटा
जैसे उसकी सारी दुनिया ही उलट गयी
मौत से पहले
चट्टानों में दमकता था उसका शरीर
पहाड़ की कठोर छाती के ऐन बीच
उसकी हुंकार सबने सुनी है ।
देखा है पेड़ों की बेवजह उमड़ती शाखों के
आमने सामने एक खुरदरा
और खुशमिजाज चेहरा

कई हत्यारी खानें
जिन्दगी को प्रेम करते आदमी का रास्ता
रोक लेती हैं
उसे अपने में समो लेती हैं औंधे मुंह
उस वक्त जबकि ठेकेदार पानरचे मुंह से
मुस्काता हुआ बाजार भाव पढ़ रहा होता है
और मैनेजर
शाम क्लब की हाऊजी में भाग्यशाली होने के
सपने में डूबा

मौत ने अचानक आकर
उसके मस्त गीत की लय को तोड़ दिया

और तब ही
जड से कटे पेड जसा वह
लोहे पत्थर के मलबे मे धँसा
वक्त के खौफनाक गारे म सना
निर्जीव होकर रुक गया

हॉलीहाक

अपनी निधनता मे
वे उचक रहे हैं
दीवार के उस पार से
चमकीली सुन्दरता म बुला रहे हैं

इस ठहरे हुए भयानक समय मे
इस जड सगठन के आतक मे
हिंसा की दहशत मे जकडती हिंसा के माहौल मे
वे मिफ झाक रहे हैं
धूप से कजलाये मैदान के उस पार
जहां थोडी देर पहले
रिक्शाचालको के जुलूस पर लाठीचाज हुआ था

वे अपनी एक एक पंखुडी
धीरे धीरे खोलेंगे
लेकिन तब तक
बहुत देर हो चुकी होगी
उनकी सुन्दरता मुक्त करना चाहेगी हम
लेकिन तब तक
बहुत देर हो चुकी होगी

अपने प्रिय कवि को याद

साफ़ चमकीली धूप मे
नहाती हुई चिड़िया की तरह
तुम्हारी कविता
मुझे पुकारती है
वहाँ जहाँ मादल और बासुरी के सगीत म
चीक्ट कपडे निखर आये हैं
गुडहल के फूलो जैसे
या वन पलाश की अँगुलीनुमा पखुडियो जस
चेहरे
खिलते हैं गरीबी को चुनौती देते

तुम्हारी कविता एक पुकार है
यौवन के बीते वर्षो से उठती हुई
जब मधुश्रावणी ने औचक जगा दिया था
एक स्वप्न से दूसरे स्वप्न की यात्रा के बीच

कविता स्मृतियो की मुट्ठीभर रौशनी है
वे लोग जो इसे गाते हैं
जीते हैं
उनकी जीवनानुरक्ति के लिए
यह तुम्हारे हृदय को असख्य रक्तकोषो से
सींचती है

हॉलीहाक

अपनी निधनता मे
वे उचक रहे हैं
दीवार के उस पार से
चमकीली सुन्दरता मे बुला रहे हैं

इस ठहरे हुए भयानक समय मे
इस जड सगठन के आतक मे
हिसा की दहशत मे जबरदस्ती हिंसा के माहौल मे
वे सिर्फ झाँक रहे हैं
धूप से कजलाये मैदान के उस पार
जहाँ थोडी देर पहले
रिक्शाचालको के जुलूस पर लाठीचाज हुआ था

वे अपनी एक एक पँखुडी
धीरे धीरे खोलेंगे
लेकिन तब तक
बहुत देर हो चुकी होगी
उनकी सुन्दरता मुक्त करना चाहेगी हमे
लेकिन तब तक
बहुत देर हो चुकी होगी

अपने प्रिय कवि को याद

साफ चमकीली धूप मे
नहाती हुई चिड़िया की तरह
तुम्हारी कविता
मुझे पुकारती है
वहाँ जहाँ मादल और बाँसुरी के सगीत म
चीक्ट कपडे निखर आये हैं
गुड़हल के फूलो जैसे
या वन पलाश की अँगुलीनुमा पखुड़ियो जैसे
चेहरे
खिलते हैं गरीबी को चुनौती देते

तुम्हारी कविता एक पुकार है
यौवन के बीते वर्षों से उठती हुई
जब मधुश्रावणी ने औचक जगा दिया था
एक स्वप्न से दूसरे स्वप्न की यात्रा के बीच

कविता स्मृतियों की मुट्ठीभर रोशनी है
वे लोग जो इसे गाते हैं
जीते हैं
उनकी जीवनानुरक्ति के लिए
यह तुम्हारे हृदय को असख्य रक्तकोषो से
सीचती है

आज मैं सिर्फ याद करता हूँ
वह साफ चमकीली मुस्कान
वह साग पत्र भरी हथेली
जिसकी कमाई

बस, याद करता हूँ

मास्टरनी और गुलाब

—"तुम्हे कवि क्यो चाहिए ?"
—'शहर को बचाना जो है।"
—एरिस्टोफेनीज

वह अपने बचपन मे
एक बीमार लडकी
शहर के सभी बडे और भयावने
स्कूलो से वापिस लौट आयी

लेकिन अब यह शहर
उस अनमनी युवती को
और सुरक्षित नही रख सकता

एक लाल दहकता फूल
वह अपने बालों मे खोस
सन् पचपन की कविता सी
घूमती है अनेक कोमल हाथो के बीच
और मैं खुद इतना
सकटग्रस्त और बेगाना

फिलहाल कोई दूसरा कवि नहीं
जो इस शहर को बचा ले
इस फूल को, इस घिसटती युवती को

उस रचना ने मारा है
घायल किया है
अ-व्यवस्था की व हिंसा ने
जो हर किसी युवती को मारती है
एक एक ईंट रखती हुई धीरे धीरे

उसके टूटे मन में
अ रा अनार की टूटी स्मृति और इच्छा है
और वह मरती भी नहीं
रेंगती है सारे शहर में समान

दिन

गृहस्थी के मैले विस्तर से उठते ही
तुम जगल की तरफ
अपना मुँह फेरे खडे होने पर
बहुत उत्साहित महसूस करते हो।
यह तुम्हारे आत्मविश्वास की
सबसे सुखद घडी होती है।

दिन मे होनेवाली दुर्घटनाओं की
आशका मे धडकते हुए
मैं तुम्हें खुद से कहते हुए सुनता हूँ—
        "और कुछ न हुआ तो
        यह जगल तो है
        यही मेरा आखिरी शरणस्थल होगा।"

लेकिन दरवाजे की ओट मे छिपा
वर्दीधारी आदमी
सूरज की तरफ आँख मारता है—
        "इस कमीन के जगल मे पहुचने से पहले ही
        रात हो जायेगी   ।"

रात रात यानि सूरज की कमजोरी।
मुझे तुम्हारे ऊपर दया आती है

कि तुम पहले से ही सूरज को
अपनी तरफ करके
इस पुरपेंटिये को चकमा क्यों नहीं देते ?

वह रात का इंतजार करेगा
जबकि तुम दिन में ही
बहुत दूर निकल जाओगे

तुम्हारे भीतर से रचने के लिए

तुम्हारी दृष्टि ने बहुत दूर तक पीछा किया है मेरा
जिस तरह चीटियाँ भोजन की गन्ध का पीछा करती हुई
हो जाती हैं व्याकुल

कोटरो मे धँसी हुई आँखें
थके हुए पाँवो की अनगिनत फाँसें और एक तरफ
भोल खाय क धो का बार बार आगे धकेलने का ढब
तुम्ह लगता है जस कि मैं तुम्ह भूल गया हूँ
और अपने परेशान दिमाग म तुमसे छुटकारा पा जाने का सुख
सुरक्षित रखना चाहता हूँ
लेकिन मैं बढा ही कहा हू तुमसे आगे
तुम्हारे स्पर्शों को भोला-भगा खाट पर हमेशा महसूस करता
मैं तुम्हारे साथ-साथ बिखरा हूँ

तुमने जब रचना शुरू किया
असीम उत्साह के कारण तुम जल्दी ही टकराकर सुन्न हो गये
और अपनी भाषा की गुलगाठ खोलने के लिए
तुम मेरी प्रतीक्षा करने लगे
लेकिन मैं गया ही कहा था जो कही से आता
बटी हुइ रस्सी को खीचकर मैंने सीधा तो किया था
पर अदृश्य गाठो की जटिलताएँ बढती गयी

कि तुम पहले से ही सूरज को
अपनी तरफ कर लो
इस घुसपैठिये को चन्दमा क्यों नहीं देते ?

वह रात का इन्तजार करेगा
जबकि तुम दिन में ही
बहुत दूर निकल जाओगे

तुम्हारे भीतर से रचने के लिए

तुम्हारी दृष्टि ने बहुत दूर तक पीछा किया है मेरा
जिस तरह चींटियाँ भोजन की गंध का पीछा करती हुई
हो जाती हैं व्याकुल

कोटरों में धँसी हुई आँखें
थके हुए पाँवों की अनगिनत फाँसें और एक तरफ
झोल खाये कंधों का बार बार आगे धकेलने का ढब
तुम्हें लगता है जैसे कि मैं तुम्हें भूल गया हूँ
और अपने परेशान दिमाग में तुमसे छुटकारा पा जाने का सुख
सुरक्षित रखना चाहता हूँ
लेकिन मैं बढ़ा ही कहाँ हूँ तुमसे आगे
तुम्हारे स्पर्शों को झोला-झंगा खाट पर हमेशा महसूस करता
मैं तुम्हारे साथ-साथ बिखरा हूँ

तुमने जब रचना शुरू किया
असीम उत्साह के कारण तुम जल्दी ही टकराकर सुन्न हो गये
और अपनी भाषा की गुलगाँठ खोलने के लिए
तुम मेरी प्रतीक्षा करने लगे
लेकिन मैं गया ही कहाँ था जो कहीं से आता
बटी हुई रस्सी को खींचकर मैंने सीधा तो किया था
पर अदृश्य गाँठों की जटिलताएँ बढ़ती गयीं

जानता हूं तुम्हारी खासी में एक कहानी घटित होती है
तुम्हारे चप्पलें पहिने कमरे में घिसटने से
दारुण और निर्मम संगीत की लय बनती है

मेरा पीछा मत करो
मत फेंको टीन के दरवाजे से अपनी पैनी नजर की सलाखें
मैं बाहर नहीं जा रहा बल्कि तुम्हारे भीतर
खाली पेट से उठती हुई गूंज को दूर तक नापना चाहता हूँ

हम दोनों दरअसल पेड़ हैं जिनकी जड़ें खूब ऊपर जाकर
कभी दुबारा जमीन पकड़ेंगी
हम अपनी जगह छोड़ने के आदी नहीं हैं
हम अपनी वापसी भूलकर नदी भी हो सकते थे
लेकिन हमारी नसों में पहले से ही परम्परा का विस्तार नहीं
गहराई थी

तुम्हारे सोच के रेशों से बनी किरणों के चाबुकों ने
बहुत उधेड़ा है मुझे
तुमने मुझे बार-बार खींचा है अपने लथपथ शरीर के पास
जबकि मैं खुद तुम्हारे पास बढ़ता रहा हूँ

मेरा विश्वास करो
मैं तुम्हारे भीतर से ही सब कुछ रचने के लिए कितना परेशान रहा हूँ

एक शाम अपने पिता के साथ

आ कि
एक उदी शाम मे बेचैन होकर
मैंने पीछे देखा है तुझे
अपने दलिद्दर की पीठ पर रेंगते असफल इरादों की तरह
तेरे जिस्म के मैल को
भीगी आँखो मे भरे
छानते हुए कि
देखने के मायने क्या होते हैं
कौन-सी दगियाँ हैं
जो एक बार ओढी गयी तो उतारे नही उतरती हैं

आ, कि धु ध के बुलबुले सारे नक्शे पर
काढते कुछ फरेबी लोगो के बीच
कलम की खिलती रोशनाई से ठोस मूरतें रचता
मैं ठहर गया हूँ
अपनी तीन पीढियो के अकूत खडहरो म
और मेरे पिता के हाथ म एक कागज
उनकी उज्ज्वल कृपा का
फडफडाता जैसे अभी इस भुतही हवेली से
उडेगा यह कबूतर

शायद उ होंगे हमारे लिए
कुछ दाने बिखेरे है
क्योंकि मा टुलसकर हमे कुछ देर वाहर
घूम आने को कह रही है

6

वह

उदासी मे डूबा है
उसका स्याह चेहरा
गालो की उभरती हड्डियो पर
फली इस बीमार सुख मुस्कान के लिए
मेरे पास
पिछली स्मतियो के हवासिल हैं
उडाने को

वह मा बनने से पहले
तैरती हुई प्रवासी मुर्गाबी जसी
जीवन्त और सहमी हुई थी
लेकिन अब
सूखी पहाडी की तरह
हमले की चिन्ता से डरी हुई
इस सकपकायी नाम म
आलू छीलती

उसे बार-बार भ्रम होता है
कि मैंने उससे कुछ कहा है
पानी मांगा है या कुछ और

अब उसे सुनायी नही देती है
अतीत की उमगभरी वह सीटी
सिफ भीतर एक अनजाने शहर मे धँसे
रात की सक्षिप्त बातचीत होती है
जिसे
गृहस्ती कहा जा सकता है

माँ

माँ कभी कुछ नही कहती है
उसने देखा है
धूसर रगो मे
हमारे सुख दिपदिपाते चेहरो का खिलना।

उसने समय की जलती दुगन्ध पहचानी है
सूखे काँटो को बटोरकर
सर्दी से बचाया है हमे।

वह सब्जियो के बीज इस कठोर मिट्टी मे
गाडने मे लगी रही है चुपचाप।
उसने अपने ममत्व की सुहानी धूप मे
हमारी झुकी गर्दनें उठाकर
दिखाया वह फला प्रदेश जहा नदी
अनायास गायब हो गयी है।

माँ, तुम्हारी धुधली आखो के आग
कान्क्रीट के पुल का भीषण यातायात गुजरा है
सर्दी के दिनो मे लगातार ठण्डे पानी से
नहाते हुए ठिठुरा है असफलता का बोध।
तुम्हारी हड्डियो म
इस अथक जीवन के कारावास का कष्ट गूजता है

तुम्हारे पके बालो मे
निरतर खटते रहने की जिदभरी यातना बिखरी है।

मा, तुमने निरतर अपने अमर दुख की कविता रची है।
तुम्हारे एक एक शब्द ने हमारे
वक्त की झुर्रियो को साफ किया है।

मा के सग रहते हुए ही
हमने जाना कि
धरती पर जीवन अकुरित हुए बहुत युग बीत चुके हैं
फिर भी धरती उसी जगह ठहरी है

गति से प्रथम सुरक्षा

ठण्डे पत्थर पर बनी
बटी थिर आँखें मछली की

वे दहशत की चुप्पी मे
तनिक सी डबडबाती है
फिर घूम जाती हैं
अँधेरे की शान्त लहरों की तरफ।

कायर तुम्हे छिपना नही था
हिंसा का प्रतिकार लेना था
यह हत्या जो तेरे सामने हुई है
तुम्हे दर्शक होने के पाप से
कभी मुक्त नही करेगी।

बार-बार एक सदभावना
एक चीख लौट गयी इस दरवाजे से
और तेरे मृतलेपन मे
सिर्फ अपने आपको सुरक्षित रखने की चिन्ता थी।

जहां कभी प्रकाश था
वहाँ लगातार राख गिर रही है
सोच, तेरे लिए अब इतिहास मे

क्या लिखा जायेगा ?
शायद यह   कि एक सुरक्षित समय के
अभाव में हत्या की गयी।

क्योंकि मृत्यु से ज्यादा सुरक्षित
क्या हो सकता था ?

दुविधा

पहले वह हँसी थी
फिर रोयी क्या ?

उसके प्रेमी की हत्या के बाद
वह नया आदमी बिल्कुल अपरिचित
मगर सब कुछ पहले से ही जानने का दम्भ लिये
वह आदमी
झण्डा लेकर उसे वरने आया था
पैट्रोल की भील पर दौड़ती आग मे
उसका रौद्र मुख और आखें
शक्ति के बीज म से फूटती कोपिकाओ की
चुनौती जैसी

औरत न उसे स्वीकारा
और रक्त म सानकर स्मृति के ऊपर बैठा दिया

जो अब नही रहा वह केवल इतिहास था
और स्मृति ही न रही
तो वह पहला आदमी क्यो लौटकर
उन दोनो को आतंकित करता ??

मुक्तिबोध

हम उसे सुरक्षित रखना चाहते थे
एक सुबह चिड़िया की टूटी उड़ान मे
हवाओ के तेज प्रवाह से बचाते हुए

उसका दर्प उसके तिरछे खरोंचभरे चेहरे पर झलकता था

जिसे हम अपनी सस्कृति के भव्य सूनेपन का
सबसे जीवन्त उपलब्धि का उदाहरण बनाकर रखना चाहते थे
वह थक चुका था

लेकिन
उसकी थकान मे भी मद्धिम लौ का आकर्षण था
उसके हाथो मे उभरी नसो का जाल
बिल्कुल वैसा ही जैसा कि उसके दिमाग के अमर कोषो म
स्मृतिया और आकाक्षाओ के विचार गुथे हुए थे
वहा एक तितली की तरह उसकी भाषा
रस और गन्ध के लिए नही भटकती थी
बल्कि एक खान मजदूर के सुनिश्चित कार्यक्रम म
बारूद से उड़ाई चट्टानो की तरह धमाका करती हुई
वह थी छोटे छोटे वाक्य खण्डो म भी
ठोस पत्थर मे छिपे अद्भुत छटपटाते जीवन की खुरदरी रगड़

वह आदमी पातालभेदी बोट की तरह अपनी लिखावट में
चलता हुआ
डूबी हुई सीढ़ियां बारादरियों पर से काई की परतें हटाता
वह एक अकेला मजबूत क़दम जिसके छापे के नीचे
पहले का सब कुछ ओझल होता हुआ और जिसके बाद
लगातार पंक्तिबद्ध जुलूस जिसमें उस जैसा ही हर कोई
आदमी व्यक्ति भी और समूची संस्कृति भी
दुःख के घटाटोप में से
रचता हुआ भाषा के मुक्तिदायी रहस्यों का प्रकाश

टेढ़ी सीढ़ियों पर चिन्दियां लगे कुर्ते की मटमैली खोल में
वह उकडूं बैठा रहा बहुत अरसे तक
और आकाश की अनगिन निहारिकाएँ मुग्ध करती रहीं
बच्चों के मीठे सपनों में हुलसती उसकी बीवी को

गृहस्थी का नुकीले लोहे की पतरियों से बना सन्दूक
ढोते ढोते उसके हाथ घायल हो गये
लेकिन भीतर उसके मन में फूटता रहा
प्रिसमैटिक रंगों का ज्वार
वह शब्दों की दुर्घटना में दिक्काल से परे फेंकता रहा
अपने एकान्त के तिलिस्म से निकलता एक पारदर्शी चौथा
साहित्य पर छायी हरी फफूंद की मोटी परत के नीचे से
निकला एक बड़ा सारा अरुण कमल

जिन्होंने सदा काटी हैं जड़ें
और ध्वस्त की है सूखे प्राचीन पलस्तर में पपड़ाई तुच्छ दीवारें
वे भी हैं अवाक्
सुनते हैं कवि के ठण्डी लिथड़ती कीचड़ में भी निरन्तर
आगे बढ़ते जाने की छपाक छपाक
सूखते पुआल में से एल्यूमिनियम के बर्तन की नाचीजियत
जैसे चुनौती देती है
ढलवां इस्पात के सुतवां खम्भों के नीचे
कच्चे खुरदरे पत्थर की ऊर्जा और टनकार हो जैसे

आदमी की मोटी खाल की अनेक निर्जीव तहों के भीतर
इस कवि की पैनी दृष्टि की बिजली टूटकर गिरती है
यह नीचे से उठता है
और तुम्हें घसीटकर नीचे ले जाता है अपने साथ
यह तुम्हारे ठण्डे मृत जिरहबख्तर के टुकड़े-टुकड़े कर देता है
फिर तुम्हें अपने साथ ऊपर लेकर उठता है
काई के खोल में से निकलते सूरज की तरह उन्मत्त और चमकदार

सब कुछ शान्त है
कविता की चीखती लय के फेड आउट हो जाने की तरह

एक आदमी अल्पनाओं के पीछे चिना हुआ

जिन्होंने दीवारें सजायीं
वे दीवारों के नीचे दब गये थे।
चूल्हे की राख में भुने
चूने जैसे मुरमुरे।
उन पर मोर नाचा
और बिल्ली मुस्काई
एक उड़ती हुई चिड़िया डरी
धूप की तरह पांच के वक्त
कुछ हटी, सिमटी
उसकी अपनी ही परछाईं।

वे लोग झगड़ते हैं
और कहते हैं कोई झगड़ा नहीं हुआ
पूछोगे तो कहेंगे कभी नहीं रूठे
दूर नहीं हुए
शासन में चिपके रहकर भी
वे साधु भये
और हम साधारण।

कभी नहीं बोलतीं दीवारें
सजे हुए फूलों और उनकी सवारियों से

कि उनके चटख रगो मे
कलाकार के खून की उजास भरी होती है।

हत्या के बाद भी
यह घर बहुत सुदर है
आत्मीय और भीतर बिठलाने को तत्पर है।

चढ़ना

चढ़ना, बेल का चढ़ना
ज़बरदस्ती किसी का प्रेम करने की ज़िद है

बहुत धीमी गति से फूटती हैं कोमल नुकीली टहनियाँ
जैसे बहुत नाज़ुक सहमी उँगलियों से डरते डरते
कुम्हलाहट भरे स्पर्श —
        बस इतना-सा और छूने दे
        पूरी लिपटूँ तो बिल्कुल नीचे पटक देना

लेकिन चढ़ना उतरने को भूल जाना नहीं है

निपटकर आत्मनिर्भर एक गर्मी शायद उसमें छिपी
अकेली टीस को बाहर खींच लाये
यही आशा खींचती है ऊपर और ऊपर
कभी-कभी काँटों से बिंधते वक़्त
कोंपल सोचती है हृदय छलनी किया इस कम्बख़्त ने
पूरा हरजाना लिया है वज़न का मेरे
लेकिन यह भी तो शायद सोचता होगा
काँटों में फँसाकर हमेशा के लिए बाँध लूँगा
और सीने से चिपट चिपटकर ज़ख़्म तो कुछ दिनों में
ठीक हो ही जायेंगे

और   इसी कल्पना में बेल
पेड़ को चारों ओर से ढँकती हुई गायब कर देती है

प्रतीक्षा

1

मैं अपनी आजादी और अकेलेपन से आतंकित हूँ
तू अपनी सुरक्षित रहने की चिन्ता मे कैद

चिड़िया की सारी आशा
घोंसले मे बन्द है
अँधेरा दूब पर रखता है नाजुक सँभले हुए कदम
कही कोई भूतकाल की परछाइं का आकार
बिगड़ नही जाये

2

सिर्फ प्रतीक्षा ही तो जिन्दा रहने का प्रयोजन नही होगी
साठ करोड़ जीवों का एक सपना कब टूटेगा
रात की फिल्म को देखकर न जाने किस तरफ से आयेगा
रोशनी का देवता

मैं भी तेरी प्रतीक्षा करता हूँ
बया की तरह अपने पंख निरन्तर फड़फड़ाना
लेकिन यह नही हो सकता कि
मैं वर्तमान को पूरी निराशा के सूखे काठ की तरह सहूँ

3

रगों की कोंपलें फूटती हैं
लेकिन जलने की गन्ध का तेज विस्फोट
कुछ भी नहीं देखने देता

सब कुछ प्रतीक्षा में है, मिट्टी का डला
या   एक लरजी कँपकँपाती शाख
फूल की डोडी में छिपी मुस्कान और व्यस्त चींटियों की
सेनाएँ
सब कुछ चौकन्ने इन्तजार में है कवि के—
उसके प्यार में जवान हो रही हैं
धरती की धूप में लिपटी हुई गोलाइयाँ

4

एक अदृश्य बारीक तार में लिपटा हुआ कीड़ा है तू
मेरे शब्दों में गहनतम स्नेह से अभी वंचित
लेकिन अधर में झूलने की वेदना और सजीवता से ओतप्रोत
मेरे पहुँचने की प्रतीक्षा में

5

चटख नीले पंख का
जिस तरह सिन्दूरी आसमान में धीरे-धीरे खुलना हो—
अपनी कलम में प्यार के आवेश को भरे
मेरा आना देख

तू देख तो सही
कोई-कोई पत्ता भी फूल का रंग चुराता हुआ
दर्द की लपट को
सारे पेड़ पर चढ़ाने की कोशिश में लगा है

जल जाने दो

आज ढूँढती हैं आँखें जिसे
छिपा है वह किस शृंगार में
मेरे सिवा यहाँ कौन उसे पहचानेगा
और मैं हूँ कि
रोशनी से भरपूर भट्ठे को सहता हुआ
उसके मिलन की आशा में
धड़क रहा हूँ।

एक शहर काँप रहा है
औरत की बिजली से
बटन दबता है और बड़े धमाके के साथ
उतरती है एक नीली साड़ी
गजरे की महक में काला, गूँथा जूड़ा
भीड़ को जकड़ता है चहारदीवारी में।

औरत की नंगी नाभि में
चमकता है हिरण्यगर्भा एक चेलज
मैं कहता हूँ
शहर यह भरा पूरा सिर्फ तुम्हारा है
बस मुझे बता दे पटाखा औरत!
वह कहाँ है
जिसकी हँसी में सौ अनारों के
चमकीले आश्चर्य हैं ??

लडका

गीत के बाद
भुखमरी का इलाज ढूंढता
लडका
तुम्हारे सामने हाथ फैला देता है
बिन बाहों की मैला चीकट
कमीज में
वह अपने ढांचे को
और भी ज्यादा लटका देता है

हमारी धरती की यह बाल छवि
ये इसकी मरी हुई नीलगाय की सी आखें
गले मे रफी का दद
लेकिन
यह अभी तक भी भूला नही है
माँ का चेहरा
उस बाढ से पहले की ग्राम कथा मे

"बाबू मैं डरता हूँ रेल पुलिस से
अपनी पसन्द का कोई गाना सुनेंगे ?
देखेंगे, कैसा मीठा है गला
गरीब और आजाद होन की निष्ठुरता मे ?"

एशिया म पहाड़ हैं
नदियाँ और भीषण ज्वालामुखी हैं
बर्फ की फिसलती चट्टानें हैं
एशिया म धान के तरबतर खेत फैले हैं
सेवा के बगीचे खुबानियाँ
और सरग अंगूरों से लदी बेलें हैं

लेकिन
जब तक इस लड़के की आँखों मे
जलावतन होने का आश्चर्य है
जब तक इसकी डूबती, भर्राती आवाज म
जीवन, यौवन से खदेड़ दिये जाने का दर्द है

एशिया का सारा खून सर्द है।

पारिस्थितिकी

दूर एक चीख नही
कुलबुलाहट है
मैंने पहचान लिया है
आवाज़ के दुमुहेपन को
एक पैनी नन्ही सुई के नश्तर मे
थकावट ही थकावट है

वह ताज़गी नही
जिसके पाने पर हम खिल उठते
एक अचानक विद्युत हुई खबर मे
सिर्फ एक दिपदिपाहट है
आज़ादी नही

तुम मुझसे नाराज़ हो
हम एक दूसरे से नाराज़ हो सकते हैं
इस घर मे दो किरायेदारो की तरह लड़ सकते हैं
लेकिन
रोटी से हमारी कोई लड़ाई नही है
उसे पास रखने की छटपटाहट
वह मुस्कराहट है
जो रोते हुए भी आ ही जाती है

कहीं कोई दुभाषिया नहीं अटका
बात बिल्कुल साफ थी
जो होना चाहिए था
उसके लिए पहले शब्द होने चाहिए थे
फिर प्रतीक्षा, आशा, यत्न
मृत्यु नहीं एक जिज्ञासा अभी तक है कि
आदमी-बदन से
कहीं कुछ बदल जाये हमारे दूर में

एक लटका हुआ सन्नाटा
भीतर समाधि बनने के लिए
तड़पता है
और हाथों में कुचली हुई हरकत है
बस एक कविता की डूबती हुई-सी हलचल है।

जिन्दा चाहिए

नंगे पाँव भागते हुए दहशत से
उसने बताया
पकड़नेवाले आ रहे हैं

एक छिली हुई चमड़ी की फुसफुसाहट
और उसकी आँखों की
सहमी खरोंच

मैंने सुना उसे पकड़नेवाले आ रहे हैं

कंकरीली धरती पर घिसटता
पसीने से लथपथ
वह दौड़ रहा था
जंगल की भयानक आज़ादी में
हाँफता
वह घर पहुँचकर छिपना चाहता था
भूखा, ठण्ड में सिकुड़ता हुआ

जंगल काटना जुर्म है
और इस जुर्म की सज़ा
फिलहाल भूख है

जबकि मेरे पडोस का एक आदमी
पेडो को बेहद प्यार करता है
वह रामधन नही
बल्कि उससे बहुत ऊपर
सुरक्षित, मजबूत, एक बडा आदमी है
जो पेडो को आलमारियो, मेजो
कुर्सियो की शक्ल मे सजाता है
वह इनकी सुदरता की प्रशसा करता है
और फिर
दूसरे लोग उसकी प्रशसा की प्रशसा करते हैं
रामधन ऐसे ही आदमी से तो डरता है

वह भाग रहा है
वह भूखा है
और ईंधन की तरह
उसकी सूखी खाली आखें
भूख की तिलमिलाहट से जल रही हैं

पुल पर पानी

खाली बादलों के डरावने प्रदेश से बाहर
मैं कभी नहीं निकल पाता
यहाँ एक उमस है
जो ठण्डी हवा की प्रतीक्षा कर रही है

लाल वर्दी में कोई मुक्तिसैनिक
इस घुटन को नहीं तोड़ सकता
यहाँ समूह कभी नहीं बनता
केवल मदुमशुमारी होती है

एक निर्बाध निर्लक्ष्य बहाव में
अपनी रोटी के निवाले को भीजने से
बचाने की व्यापक चिन्ता
जो वह लौटा ले जाती है
पुआल के रास्ते नींद के डूब घर में

ये लोग अपना दुख बाँचते हैं
उसके आने के सभी रास्तों से वाकिफ हैं
लेकिन ये कुछ भी नहीं कर पाते

लगातार एक बौछार
इन्हें पीटते रहती है

जबकि मेरे पड़ोस का एक आदमी
पेड़ो को बेहद प्यार करता है
वह रामधन नही
बल्कि उससे बहुत ऊपर
सुरक्षित, मज़बूत, एक बड़ा आदमी है
जो पेड़ो को आलमारियो, मेज़ो
कुर्सियो की शक्ल म सजाता है
वह इनकी सुन्दरता की प्रशसा करता है
और फिर
दूसरे लोग उसकी प्रशसा की प्रशसा करते हैं
रामधन ऐसे ही आदमी से तो डरता है

वह भाग रहा है
वह भूखा है
और ईंधन की तरह
उसकी सूखी, खाली आँखें
भूख की तिलमिलाहट से जल रही हैं

पुल पर पानी

खाली बादलों के डरावने प्रदेश से बाहर
मैं कभी नहीं निकल पाता
यहाँ एक उमस है
जो ठण्डी हवा की प्रतीक्षा कर रही है

लाल वर्दी में कोई मुक्तिसैनिक
इस घुटन को नहीं तोड़ सकता
यहाँ समूह कभी नहीं बनता
केवल मर्दुमशुमारी होती है

एक निर्बाध निलक्ष्य बहाव में
अपनी रोटी के निवाले को भीजने से
बचाने की व्यापक चिन्ता
जो उन्हें लौटा ले जाती है
थकान के रास्ते नींद के डूबे घर में

ये लोग अपना दुख बाँचते हैं
उसके आने के सभी रास्तों से वाकिफ हैं
लेकिन ये कुछ भी नहीं कर पाते

लगातार एक बौछार
इन्हें पीटते रहती है

इनकी नैतिकता हर वक्त इतना सहती है
कि
इनके खाली घर म
धय का भण्डार कभी खाली नही होता

दीवार के पार पहुँचने की आशा लिय
बर्फीली रात म भी
जन्मते हैं नये रूप
घर के नाम पर तिनका की
भूलभुलैया म असुरक्षित के बीच
कुछ सुन्दर रचने का हौसला रहता है

लेकिन वहा भी
जलमग्न होने की दहशत
इन्हे सूरज से पहले ही उठा देती है

मैंने इसी प्रदेश मे देखा है
पीढी दर पीढी मलवे के नीचे
दबते चले जान का
एक अटूट क्रम
सगीना और काले अक्षरा के मिश्रित
आदेशा पर
प्रेतो द्वारा भक्षण किये
मनुष्या की ठठरिया

यहा बहुत अर्से से
शोषक और कगालो के बीच
पानी मे डूबा लकडी का पुल है
पानी की दीवार म
दोनो का साझा है

दाल

गलियारे मे
सिमटी भिंची औरत है
या झुर्रियो का एक काला उलझा हुआ लच्छा
और उसकी गोद मे उघडा
कुनमुनाता दस दिन का बच्चा
बित्तेभर धूप के टुकडे जसा
फैलने को बेसबर

वह औरत दालवाले से दस पैसे की दाल खरीदना चाहती है
कातर होकर
अपनी तीस बरसो तक ढोयी सारी विवशता
दालवाले की तरफ
हाथ फैलाकर समझाना चाहती है
लेकिन व्यथ ! !

इस बहुत लम्बी यात्रा मे
उसकी बात समझने की फुरसत किसे है ? ?

धुआँ

यह धुआँ हमे निगल रहा है
मैंने अपनी बेटियो के लिए
किरणो की चलनी मे इसे बहुत छाना
लेकिन हम सब पर सवार होने को
यह कैसा कैसा कैसा मचल रहा है

राजा आये थे
बावडियो मे सफेद बुर्राक बत्तको-सी छपछप
रानियो को आखेट मे ले गये
शाम नावें फानूसी परप धूम मे तैरती
हिण्डोला की शीतल चाँदनी से भरी

वे भी सब चले गये
डूब गये खँडहर महलो के तहखानो म—
सडती परछाइयाँ रह गयी हैं अब ! !

रथ के बिगुल की जगह
फैक्टरी के साइरन गड गये
धरती का पेट पूरने के लिए
जिन झीलो मे किलकती तैरती नगरवधुएँ
भटकती थी
वहाँ अब स्वीमिंग सरोवरो म

छह के साइरन के बाद नग्न होती हैं
समाजसेवी महिलाएँ
ये अप्सराएँ हैं धुएँ से बहुत ऊपर उड़ती तैरती
मेरी बेटियाँ नहीं ये

वो बिचारी मैली कुचैनी
इस साइरन की रहस्यमयी उत्तेजना म
कोयलोभरी अँगीठियाँ भपकने मे लगी हैं

धुआँ

यह धुआँ हमें निगल रहा है
मैंने अपनी बेटियो के लिए
किरणो की चलनी मे इसे बहुत छाना
लेकिन हम सब पर सवार होने को
यह कैसा कैसा कैसा मचल रहा है

राजा आये थे
बावड़ियो मे सफेद बुर्राक बत्तखो-सी छपछप करती
रानियो को आखेट मे ले गये
शाम नावें फ्रासीसी परप्यूम मे तैरती
हिण्डोलो की शीतल चादनी से भरी

वे भी सब चले गये
डूब गये खँडहर महलो के तहखाना मे—
सड़ती परछाइयाँ रह गयी हैं अब । ।

रथ के बिगुल की जगह
फैक्टरी के साइरन गड गये
धरती का पेट पूरने के लिए
जिन झीलो म किलकनी तैरती नगरबधुएँ
भटकती थी
वहाँ अब स्यूमिंग सरोवरों म

छह के साइरन के बाद नग्न होती हैं
समाजसेवी महिलाएँ
ये अप्सराएँ हैं धुएँ से बहुत ऊपर उड़ती तैरती
मेरी बेटियाँ नहीं ये

वो बिचारी मैली कुचैली
इस साइरन की रहस्यमयी उत्तेजना में
कोयलोंभरी अँगीठियाँ भभकने में लगी हैं

घर

इस घर के ऊपर एक घर और है
जो कभी नही हमारा होता

तेरे साथ मैंने फ्रिज के ठण्डे पानी स भरी बोतला
और कुल्फीभरे ढक्कनो के निकाने जान को देखा है
मैं हमारी पहुच से परे
उस घर मे धड़धड़ाता हुआ घुसना चाहता हूँ

डनलपिलो, कमबख्त डनलप्पिलो !
एक देह तरग है उस पर धीरे धीरे उठना गिरना
और मुस्काता हुआ हमारा बच्चा
चाभी के खिलौनो से भरे थिरकते कमरे मे

मैं खूब हमना चाहता हूँ
फट पडना चाहता हूँ, सम्पन्नता विस्फोट ! !
गरीबी का जबरदस्त उलटपुलट करता भूचाल !
सौन्दय का जगमग तैरता छत्र ! !

मैंने तेरे साथ निरन्तर उस घर की इटें चिनी है
रगीन सगमरमर के चौको पर विशाल फिरोजी, बगनी रगो के
लैण्डस्केप बनाये हैं

और टी वी म विचित्र वीणा बजाते कलाकार के सम्मुख
तुझे चूमने की कोशिश की है

अब मैं अपनी इन धोखेबाज आखों को खोलकर
तेरे साथ इस लम्बी नींद के सपने को तोडकर चीखना चाहता हूँ
मैं पुकारता हूँ उडान भरते पक्षियों को
मेरे इस अदृश्य घर को तैरते हुए
क्या उन्होंने कहीं देखा है ?

जब लौटता हू अपने घर
चाँदनी की ठण्डी अँगुलियों का सनसनाता स्पर्श महसूस करता
तब ही इंजिनियर की कोठी के भीतर बँधा
मुस्तैद कुत्ता मुझपर भौंकता है

उससे पूछो तो

अदृश्य आत्मीय तरंगो पर आ रहा है
उसके आने का सन्देश
वह ज्वार है या भूचाल या किसी मुँहसिले
ज्वालामुखी की नवीनतम हुंकार
उसकी लावा-भाषा के गारे मे सब कुछ दबेगा
या उसके इस्पाती रोलर के नीचे
सारा मरियल सोच पिसेगा ?

अभी उसके बारे मे कुछ भी तय नही है
सिर्फ उसके आने की खबर है
जिस तरह मा की कोख से जन्मे बच्चे का चीत्कार सुन
हम नही कह सकते कि वह भूखा है या
किसी भीतरी दर्द से कुलबुलाता है

कुछ भी नही कहा जा सकता

इस शोर मे ऊँचे दुर्गम पहाडो से चट्टानें लुढकती हैं
रोशनी अचानक आँखें खुलने से पहले ही फट पडी है
धूप के चाकू ने कई फाँकें की हैं ऊँघते आँगन की

वैसे भी, एक राक्षसी उनींदा डरपोकपन सिमटने लगा है
कुर्सी मे धँसी आकृति उठकर

ठोस खम्भे जितनी बड़ी हो गयी है
तैयारी केवल बेतहाशा तैयारी है उसके आने की
साँस काँप जाती है और अँगुलियों के पोर टसकने लगते हैं

कैसा होगा वह ?

शायद तुम्हारे लिए बोरियों की माँग में से दाने सहेजता
तुम्हें घी के पीपों से चमकाता
और शक्कर में पगे मोठ थाल में सजाता
या फिर उसी तरह होगा कुटिल, कंजूस और उदासीन
वर्तमान के झौंकों में तुमसे बचता
जन्म का ठलुआ और माँगते हाथों, आशान्वित आँखों को
धोखा देकर
तालाब के घाटों पर हवाखोरी करता

तुमने चाहा है एक ऐसा शख्स
जो तुम्हारे लिए लड़ता रहे
तुम्हें राशन की दुकान से घर लौट जाने को कहे
एक बलशाली पुत्र, जो तुम्हारे प्रतिपक्ष के हठीले गौरव को
बार-बार भभककर प्रज्ज्वलित करता रहे

वह आ रहा है
लेकिन जरा उससे पूछो तो
वह तुम्हारे पास ही रुकेगा
या किसी सम्पन्न व्यापारी के बेटे के साथ
बाहर मौज मनाने चल देगा ??

उन्हे दिखानी होगी

चोर दरवाजे से आती मुस्कान के सम्मुख
तुम नतमस्तक हो
मैं बच्चा की चीखभरे दिन के आगे
निढाल

वो कोई दस पन्दरह लोग होग
जो अपनी शिष्ट चालाकी से
हवाएँ बन्द किय हुए हैं

हमे बिखेरना होगा उनके आईनो मे से
गिरता हुआ मायावी प्रकाश
उनकी प्रसिद्ध राजधानियो को
अपनी भाषा के प्रक्षेपास्त्रो से उजाडना होगा

मोरपख सुन्दर तो है
पर उन्ह ही क्यो रिझाता है ?

चित्रवीथियो मे फेयर एण्ड लव्ली पुती स्त्रिया
अपने अपने प्रेम चमकाय
भटकती हैं
और आर्टिस्ट मरता है कीचसने चिपचिपी
आखावाले मेन्ढक की तरह

सामूहिक उल्लास की फूलती सीढ़ी
मेरे दोस्त
हममे से किसी के भी हाथ नही आयी

ऐसा देश जहाँ प्रार्थनाओं की शैली मे ही
सब कुछ माँगा जाता है
आर्थिक द्वन्द्व की जलती हुई चौखट पकड़े
लोगो मे जहाँ असीम प्रतीक्षा है
शान्त धैर्य है
रात मे भी दुबारा रचे जाने का

वहाँ तुम
जिसके पाँवो मे भटकन के पहिये लगे है
और हाथो मे
इस लौह-साँचे को तहसनहस करने का
हौसला है

वहाँ मैं
अभी तक भी खुश हूँ
तुम्हारी रोशनी के आत्मीय धक्के की
चमकीली सम्भावना से

लेकिन इसके लिए हम
बहुत बड़ी गुप्त तैयारियाँ करनी होगी
उन्हे दिखानी होगी
दहकते कोयलो की अपूर्व चमक
अपने धूमिल निस्तेज चेहरो पर

कविता की गिरफ्त मे

मैंने उसे पथरीले रास्ते से उठाया
वह   एक झूलते चरमराते बास का
आकार भर

मानो कोयला खान के देवता का
सजीव हरकतदार आँखें लगा हुआ
एक रूप   जिसे इस पुल के नीचे
डूबते सूरज की तरह
मैंने ढूढ ही लिया
आखिर अपनी कविता मे

मैं बेहद खुश था
मैंने मेरे ही जैसे आदमी की छवि
पा ली थी कागज पर छूटी खाली जगह के
भराव के लिए

यह न कोई ऐंद्रिक अनुभव था
न रात भर मे घूम घूमकर शहर के
गरीब मुहल्लों की बस्तियो में
निजी सवेदनाएँ खोजने का काम

बस इस जल्दी में
आदमी के टूटते मगर ताज़ा मनोबल को
सड़क से उठाकर संस्कृति की कुर्सी पर
बैठाने की मेरी कोशिश
मुझे अच्छी लगी

बहुतों को अच्छा लगता है
वह आदमी
जो उनके मुलायम रोमों को हल्का-सा
गुदगुदा जाए   व जिन्हें घर के
नौकर को होली के दिन छुट्टी देने की
कृपा में प्रगतिशील प्रतिबद्धता नज़र आती है

कुछ वे हैं जो आग के ठण्डे
गोरे मांस में
अपने देश के कामरेडों की पुरानी
तन्दुरुस्त बोटी की याद करते हैं

उसका पीछे रुक जाना

तेरी आत्मा का धुआँ
उस दिशा की तरफ क्यों नहीं बढ़ता
जिधर से रोने सिसकने की आवाज़ें आ रही हैं ?
एक चिड़िया बहुत समय से
बुला रही है सिवान में अधमरी हवा के पास
तेरे कमरे के काँच में वह क्या नहीं दिखायी देती ?

बच्चों के गिरते हुए जिस्मों का गिरना
कोई खेल नहीं है बचपन का
समझ कि दूध नहीं है पानी है
और शक्कर की बात करना पागलपन है ।

पीली कजलई मुस्कान की चुनट खोलते हुए
तू दिवाली की जगमगाहट में
मेरे सुन्दर शालीन भविष्य की भरसक सादा छवि दीखेगी
शायद वे पूछें कि तेरे यौवन की जिल्द को
इतनी जल्दी दीमक कैसे चाट गयी ?
मैं इस सवाल पर चुप ही रहूँगा
उल्टे बहती जनगंगा में अपनी डोंगी खेता हुआ ।

पक्षियों की बहुत लम्बी कतार
मैंने एक ही दिशा में उड़ते हुए देखी है

उन्हें अपने ठिकाने का पता है
लेकिन हममें से कौन है जो सही रास्ता बताता है ?

हम सब भयभीत हैं
जिसे भी गाइड चुनेंगे
अगर वह ही भटक गया या धोखा दे गया
तो फिर क्या करेंगे ?

बता
क्या तेरा मन अभी सब कुछ छोड़कर
यहाँ रुकने को करता है ? ?

एक सुबह बुलबुल की तरह

सुबह उठने पर भी
निस्तेज सा हूँ मैं
अँधेरे ने पीछा किया है पुलिस की तरह
कंगाल परिवार के ऊपर चोरी का इलजाम लगाते

थका हूँ लिखने न लिखने के बीच
चुप्पी को अपने कन्धे से चिपकाये
प्रतीक्षा करता रहा हूँ
एक प्रसन्नचित्त दोस्त की
न जाने वह कब तलक आये

लम्बा चम्मा अनगढ़ प्रदेश है
पहाड़ों के उभरे कपालों पर जलता हुआ
सीसे का लेप है
और पेड़ों की नंगी नसों में हवा की साय साय
खाई के गहरे शून्य में अपलक झाँकता रहा हूँ

आशा सिर्फ एक अनबुझ जागती हुई आशा
कि शायद कभी सुख के कपाट खुलें
और वह बच्चा जिसके चेहरे पर कुपोषण की सफेद
झाईयाँ हैं
सेव की सुख ताजगी में कभी खिलखिलाये

मैल की चिपचिपी परतो के बीच बैठकर लिखना
एक ममान्तक पीडा है
और हर सुबह है उदार पूजीवादी म द मृदु हँसी
और सकीण मार्क्सवादी दपभरी गुर्राहट के बीच फँसी
एक बुलबुल की तरह
काली और कण्ठ पर मे घायल
मीठी आवाज म भी आतकित करती हुई

खुद की ही लगायी झाडियो से घिर गया हूँ
लहूलुहान हूँ बिंध गया हूँ
अनन्त सघन रात की नीद म
कई सपनो के जबडेदार नुकीले इस्पाती दरवाजे भडभडाते रह हैं
और अधढहे खतरनाक गोखो म से
लटकते काले साप मेरी ओर बढते आ रहे हैं
आज सुबह से ही आखो के नीचे
गहरी खुदी काली रेखाएँ हैं
अपने ही शरीर के खँडहर मे छटपटाता हूँ

मेरे सामने रोशनी की धीरे धीरे प्रकट होती पगडण्डी है
लेकिन आज न जाने क्यो
फिर से नीद के साम्राज्य मे लुढक जाना चाहता हूँ ? ?

पुन दर

वापसी

घडो के बारे म लिखो
एक ही हाथ के कौशल स एक सी ही रचनाएँ है ये

क्या तुम दो कविताएँ एक सी बना सक्ते हो ?

उस अभिन्न सौन्दय के बारे मे लिखो

वाक्या के टुकडो को हृदय चीरकर बाहर निकालत वक्त
कही भी खून का अश न हो
बिम्ब के चमक्ते शीप पर बिनबनी बात की मायूसी
टापती न दिखायी दे

लिखो अगर सम्पूणता के विश्वास को बार बार
धरती पर उतारा का करतब हो

मुद्दी-नाहक तग मत-करो टाइप कविता के भाव को
शब्दो की गुम्फित जटाओ से बचाना बहुत कठिन है
यह कम आश्चय नही कि अभी तुम्हारे हाथ पाँव
लुजपुज नही हुए

जहाँ रचनात्मकता पदे मे बैठी-बैठी भी तराश रही हो
वहाँ बेसुरी एक आवाज भी कुम्भ फोडकर

बाहर आने को काफी है

तुम कमरे मे जाते समय
अपने साथ लाये धूप के कई तीर बाहर क्या पटक देते हो
क्या भीतर अँधेरे मे छिपी आत्माओ की बिजलिया हैं ?
तुम्हारी वापसी जिनके लिए रात्रि उत्सव का प्रमाद होगी

अटूट डूबती खाँसने की आवाजें पूछती हैं
कब लौटे ?
क्या कुछ काम बना ?
शाम के सिन्दूर का टीका भी नही

क्या अभी तक भी तुम्हे उन्होने बलि के लिए
स्वीकार नही किया ? ?

तीसरा क्षण

रोटी बनाना एक कला है।

आटा अगर ढीला रहा
तो वह चकले पर ही चिपट जायेगी
उसका एक हिस्सा उठाते वक्त नीचे छूट जायेगा
और फिर एक रक्तहीन दुर्घटना होगी
तुम्हारी वह कलाकृति
उसकी कुरूप छवि का प्रतिबिम्ब तुम्हारे खीजते चेहरे पर होगा।

किसी भी कृति को
उसके अन्तिम शीर्ष तक पहुँचाने के लिए
कभी कभी उसे दुबारा रचना पड़ सकता है
लेकिन बीच में रचनात्मक समय में
पहले से बेहतर बनाने का विश्वास और धैर्य
तुम्हें बनाये रखना होगा।

न जाने कितनी छवियाँ बार बार बनानी होंगी
और तब तक भूख खत्म न हो
तो समझो रोटी सही आदमी को ही मिली है

जो महज लफ्फाज और चुहलबाज होते हैं
वे अपनी बिगड़ी हुई रोटी को भी

सम्पूर्ण कलाकृति घोषित करते हैं
दरअसल उन्हें रोटी की भूख नहीं होती
बल्कि अपने को महान प्रयोगशील कलाकार
सिद्ध करने का दम्भ होता है।

अभिवादन एक इशारा है

प्रत्येक अभिवादन घातक होता है
क्योंकि मिलनेवाला साथी
पहले से अधिक दुबला और खूखार होता है।

वह पूछता है कैसा चल रहा है
क्या उधर भी सूखा है और अनाज
इतना महँगा है ?

उसे क्या उत्तर दू
उसे किसी भी उत्तर की आशा नही होती।
वह जानता है खूब अच्छी तरह जानता है
कि जो दर्द
मेरी कमर मे है और मेरे कंधो तक
फिरा गया है
वही सब तरफ सब लोगो मे है।

यहा ठहरना है तो ठहरो
चलना है तो चले जाओ
फक एक लघु पत्रिका का नाम है।
वैसे भी एक कायर और दूसरे विवश आदमी मे
कोई फर्क नही होता

फिर भी
फोटोग्राफर कहता है
जरा मुस्कराइये, इधर देखिए
धन्यवाद !

कल की असफलताए
आज तुम्हारी मासपेशियो मे
कुद पडी स्मृतियाँ बन गयी हैं
मगर दुनिया रेफ्रीजरेटर नही
एक धमन भट्टी है और हमारे क्रुद्ध
साथियो के शब्दो मे
हीमोग्लोबिन कुछ ज्यादा ही है।

वे हमेशा इस कोशिश मे रहते हैं
कि अन्याय का एक उदाहरण
टोरपीडो की तरह भीतर से फोडता हुआ निकले।
चाहे नाटक हो या सिर्फ एक परीकथा
हर जगह उनके खौलते विचारो का बहाव
पूरब की ओर है।

दीवारें लोहे की हैं
लेकिन जिन्होने इन्ह बनाया है
उन्ह पता है कि कहा कहाँ लोह मे कचाई है।

इसीलिए उनका अभिवादन एक इशारा है।
और इशारा करते वक्त
वे मुस्कराते नही हैं
बिल्कुल गम्भीर होते हैं।

●●●